# मुज्जफरपुर की घटना राष्ट्रीय शर्म का विषय है

**जनज्वार विशेष।** जिस तरह से इस घटना की नयी नयी परतें खुल रही है वह दिखा रहा कि कुछ लोग मानवता को शर्मसार करने में जी जान से लगे हुए हैं। एक या दो बच्चियों के यौन शोषण की बात नही है, खुद पुलिस का मानना है कि 34 बच्चियों के साथ अनाचार हुआ है।

ओर यह कोई निजी शेल्टर होम नही था, यह सरकारी शेल्टर होम था। ब्रजेश ठाकुर कोई मुफ्त की सेवा नही कर रहा था, बिहार सरकार हर साल ब्रजेश ठाकुर के एनजीओ को सरकारी मदद के तौर पर 1 करोड़ रुपए की मदद देती थी। बीबीसी की एक खबर के अनुसार, ब्रजेश ठाकुर को बालिका गृह के अलावा वृद्धाश्रम, अल्पावास, खुला आश्रय और स्वाधार गृह के भी टेंडर मिला हुआ है। ब्रजेश ठाकुर को अकेले बालिका गृह के लिए ही हर साल 40 लाख रुपए मिलते थे। इतना सब होने के बाद भी बिहार के सामाजिक कल्याण विभाग द्वारा इस एनजीओ को ठीक एक महीने बाद एक ओर सरकारी प्रोजेक्ट का ठेका दिया गया था।

इन ठेके को हासिल करने में उसके द्वारा संचालित अखबार प्रात: कमल की विशेष भूमिका नजर आती है। ब्रजेश ठाकुर का अख़बार प्रात: कमल भी औरतों पर होने वाले शोषण से लेकर उनकी उपलब्धियों से जुड़ी खबरों से भरा रहता था। ब्रजेश ठाकुर बिहार सरकार से मान्यता प्राप्त पत्रकार है। उसके दो अखबार और हैं जिसमे एक अंग्रेजी भी है। उसके तीनों अखबार, प्रात: कमल, News Net और हालात-ए-बिहार के साथ ही बालिका गृह का भी संचालन एक ही बिल्डिंग से हो रहा था जो ब्रजेश ठाकुर के घर से सटी हुई है। तीनों ही अखबारों को बिहार सरकार की ओर से विज्ञापन मिलते हैं। वह दो बार विधानसभा चुनाव भी लड़ चुका है। जाहिर है उसके सम्पर्क राज्य के सत्ताधारी दल से जरूर होंगे तभी उसे इतनी अधिक सुविधाए हासिल थी। ब्रजेश ठाकुर ने इस आश्रय स्थल को देहव्यापार का केन्द्र बना दिया था। जिस तरह के किस्से अब बाहर आ रहे हैं वो इंसान के भेष में हैवान बने लोगो की असलियत बता रहे हैं। नशे की दवाई तो छोड़िए अब आश्रय स्थल में अबॉर्शन रूम का भी पता चला है, लड़कियों को होटलों में भी भेजे जाने की बात सामने आ रही है।

**हथकड़ी की क़ैद में इस शख्स का नाम ब्रजेश ठाकुर है। जी हाँ, मुजफ्फरपुर, बिहार के बाल संरक्षण गृह की 7 से 10 साल की उम्र की दर्ज़नों मासूम बेटियों के जिस्म नोचने वाला गिद्ध यही है। गिरफ़्त में होने के बावजूद इस बेशर्म शख्स की हंसी बता रही है इसको अपने राजनैतिक आकाओं पर कितना भरोसा है कि वो इसका बाल भी बांका न होने देंगे। इसकी शैतानी हंसी सारे देश की क़ानून व्यवस्था का खुलेआम माखौल उड़ा रही है कि तलवार दंपत्ति ( आरुषि हत्याकांड ) की तरह यह एक दिन बेदाग़ बाइज़्ज़त छूट जायेगा। मानसिक रूप से विकृत ऐसे इंसान पूरे सभ्य समाज के लिए खतरा हैं।**

**वाकई इस से ज्यादा घृणित घटना आज तक नही सुनी गयी होगी जब छोटी बच्चियों के आश्रय लेने के स्थान को ही जिस्मफरोशी का अड्डा बना दिया गया था।**

# भारत मे पनामा पेपर्स पर कोई कार्यवाही क्यों नही होती ?

**गिरीश मालवीय की रिपोर्ट**

**मालूम होना चाहिए कि पनामा पेपर्स पर जिस दिन कार्यवाही हुई उस दिन मोदी का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का बनाया हुआ महल एक झटके में धराशायी हो जाएगा।**

जो संसद में जानकारी दी गयी हैं वह बेहद चौकाने वाली है। बताया गया कि एफडीआई में एक देश से वर्ष 2017- 18 में पिछले वर्ष की तुलना में 1,600 फीसदी अधिक की बढ़ोतरी हुई है ओर वो देश है..... केमैन आइलैंड।

वित्तीय वर्ष 2016-17 में जो एफ़डीआई 71.03 मिलियन डॉलर था वह 2017-18 में 1.23 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया ओर यह तब हुआ जब 2017 में भारत से बाहर जाने वाला निवेश 11 अरब डॉलर रहा जो 2016 के मुकाबले दोगुना है।

केमैन आइलैंड ने एफ़डीआई के मामले में अब जर्मनी, हांगकांग और संयुक्त अरब अमीरात को पीछे कर दिया है ओर वह मॉरीशस और सिंगापुर के बाद देश का तीसरा सबसे बड़ा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश करने वाला देश बन गया है। अब सबसे बड़ी आश्चर्य की बात सुनिए, केमैन आइलैंड की आबादी सिर्फ 60 हजार है।

जिस देश मे मेहुल चोकसी छुप कर जा बैठे हैं उस एंटीगुआ की आबादी सिर्फ 82 हजार है और वह भी इसी तरह का टेक्स हेवन है। एंटीगुआ की कमाई का मुख्य साधन यहां कर चोरों को प्रश्रय देना व उनकी राशि से कमाना, खाना है। वहाँ महज 1.3 करोड़ देकर या 2.7 करोड़ रुपए की संपत्ति खरीद कर या किसी धंधें में 10.3 करोड़ रुपए का निवेश करके नागरिकता हासिल की जा सकती है। नागरिक बनने के लिए इस देश में पैसा होना या कुछ समय तक वहां रहना जरूरी नहीं है। खासियत यह है कि एक बार वहां की नागरिकता व पासपोर्ट हासिल करने के बाद यूरोपीय यूनियन में शामिल समेत 132 देशों की बिना वीजा के यात्रा की जा सकती है।

बहुत संभव है कि ये एफ़डीआई से आने वाला पैसा मेहुल चोकसी जैसे लोगों का ही हो जिसे उससे भारत के सत्ताधारी दल के नेताओं ने अपने नाम पर भारत मे निवेश करवा लिया हो और बदले में उसके भागने के लिए सुरक्षित पैसेज दे दिया हो, पनामा पेपर्स में जो सारे नाम आए हैं वह भी इसी ओर इशारा करते हैं।

## शराब के ठेके पर लूटा सेल्समैन महिला थाने में पिटा

**फ़रीदाबाद ( म.मो. )** सेक्टर 21 बी स्थित महिला थाने से करीब 100-200 मीटर दूर स्थित एक अंग्रेज़ी शराब के ठेके में 1 अगस्त रात करीब 11 बजे दो पिस्तौलधारी घुस आये और गल्ला लूटने लगे। मौका पाकर एक सेल्जमेन जैसे-तैसे उनके चंगुल से भाग निकला और हांफ़ता हुआ महिला थाने में सहायता के लिये जा घुसा। वहां मौजूद महिला पुलिसकर्मियों ने बिना कुछ पूछ-ताछ के उसको पीटना शुरू कर दिया। जी भर कर हाथ साफ़ करने के बाद जब उससे पूछ-ताछ की गयी तो उसने बताया कि उसका ठेका शराब लुट गया; लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

हुआ यूं कि रात्रि करीब 11 बजे जब दोनों सेल्समैन ठेका बंद कर रहे तो एक ने रोटी खाने की तैयारी में अपने कपड़े उतार कर मुंह-हाथ धोये ही थे कि दो पिस्तौलधारी अधखुले शटर में से अंदर घुस आये और पिस्तौल तान दी। एक सेल्समैन तो उनके काबू में आ गया था, दूसरे को अधनंगा समझ कर इस पर ज़्यादा ध्यान लुटेरों ने दिया नहीं। इसी का लाभ उठा कर वह अधनंगा केवल कच्छा पहने-पहने ही भाग लिया और निकटतम महिला थाने में सहायता हेतु जा घुसा।

**महिलाओं के बीच इस पोजीशन में आये लड़के को देख कर महिला पुलिसकर्मी यह भूल गयीं कि वे केवल महिला ही नहीं बल्कि पुलिस फ़ोर्स भी हैं। यह तो शुकर है कि अभी उसने कच्छा तो पहना था, परिस्थितिवश किसी को बिना कच्छे भी जान बचाने के लिये भागना पड़ सकता है। इस तरह की अपरिहार्य परिस्थितियों में महिला पुलिस को अपना संयम एवं विवेक खोने की बजाय उसे तुरंत कोई कपड़ा या चादर आदि उपलब्ध करा कर उसकी बात सुननी चाहिये थी।**

महिला पुलिस की इस विवेकहीनता के चलते दोनों लुटेरे करीब 30,000 रुपये लूट कर फ़रार हो गये। यद्यपि यह क्षेत्र 21 डी की पुलिस चौकी के अन्तर्गत आता है; लेकिन जब तक उन्हें सूचना मिली और वे मौका पर पहुंचे खेत चुग कर चिड़िया उड़ चुकी थी जिन्हें तलाश करने में अब पुलिस लगी रहेगी।

## 27 जुलाई को चंडीगढ़ स्थित हरियाणा राजभवन में सहायक उप निरीक्षक रामकुमार को राष्ट्रपति पदक से अलंकृत करते राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी

**अनुभव :** हाई स्कूल, प्रभाकर और हिन्दी विषय में निश्णांत्। अध्ययन उपरांत पुलिस विभाग में नियुक्ति पर अन्य कर्तव्य पालन के साथ साथ हरियाणा पुलिस पब्लिक स्कूल, पुलिस अकादमी, मधुबन, करनाल, हरियाणा में बतौर हिन्दी शिक्षक दस वर्षो का अनुभव।

**सेवा :** वर्ष 1992 से पुलिस विभाग, हरियाणा में सेवारत। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष विभिन्न सरकारी विभागों में संगोष्ठियों का आयोजन करके कर्मचारियों और अधिकारियों को हिन्दी के मानक रूप की जानकारी देना।

**लेखन :** विभिन्न ज्वंलत मुद्दों पर अनेक हिन्दी कविताएं।

**सम्मान :** सराहनीय सेवाओं के लिए अब तक विभागीय उच्च अधिकारियों और जिले के सिविल प्रशासन द्वारा सैकड़ों बार पुरस्कत किए जाने के अतिरिक्त 26 जनवरी, 2015 को राष्ट्रपति पुलिस पदक से अलंकृत।

**संप्रति :** प्रभारी आईटीआई अनुभाग, जिला पुलिस फ़रीदाबाद।

# नीतीश कुमार और मोदी के राज में लड़की नहीं बचेगी

- आंटी कहती थी 'कीड़े की दवाई' है और खाना में मिला कर देती थी। दवा खाते ही नींद आने लगती थी। सुबह को जब आँख खुलती थी तो हमारे कपड़े फ़र्श पर फेंके हुए दिखते थे। हम नंगे होते थे बिस्तर पर।

- ब्रजेश अंकल हम को अपने ऑफिस में ले जाते थे। वहाँ जा कर हमारे प्राइवेट पार्ट को इतने ज़ोर से स्क्रैच करते थे कि खून निकल आता था।

- खाना खिला कर हमें ब्रजेश अंकल के रूम में ज़बरदस्ती भेजा जाता था। वहाँ रात को कोई मेहमान आने वाला होता था।

- जब हम गन्दा काम (सेक्स) के लिए मना करते थे तो हमारे पेट पर आंटी लात से मारती थी।

- हमें कई रोज़ भूखा रखा जाता था। खाना माँगने पर गर्म तेल और गर्म पानी हम पर फेंक देती थी आंटी।

**ऊपर लिखी बातें किसी कहानी का हिस्सा नहीं है। ये कल यानि शनिवार को मुज़फ्फ़रपुर के 'सेवा संकल्प बालिका गृह' में हुए बलात्कार पीड़िता बच्चियों ने अपने टेस्टिमोनी में कहा है। जिन बच्चियों ने बातें कहीं हैं उनकी उम्र सात से दस साल के बीच है।**

जब भी सोचती हूँ कि बलात्कार पर अब एक शब्द लिख कर खुद को जाया नहीं करूँगी तब कुछ न कुछ ऐसा घटता है कि मन चित्कार कर उठता है।

मैं सोच नहीं पा रही हूँ कि वो बच्चियाँ जो माँ-बाप से बिछड़ गयी या जो अनाथ हैं, उन्हें आप एक सुरक्षित माहौल देने का वादा कर एक घर में ले आते हैं और फिर उनका बलात्कार। छी!

और बलात्कार भी कहाँ हो रहा था?

एक ऐसे कैंपस में जिसके बग़ल से क्रांति के 'प्रात:कमल' अख़बार छप कर निकल रहा है।

बलात्कार कर कौन रहा था?

'प्रात: कमल' का मालिक ब्रजेश ठाकुर।

कौन हैं ये ब्रजेश ठाकुर आइए आपको इनके बारे में थोड़ा डिटेल से बताते हैं।

आदरणीय ब्रजेश ठाकुर जी मालिक हैं, हिंदी अख़बार 'प्रात:कमल' उर्दू अख़बार 'हालात-ए-बिहार' और अंग्रेज़ी अख़बार 'न्यूज़ नेक्स्ट' के।

**इसके अलावा वो समाज सेवा के लिए लड़कियों और महिलाओं के उत्थान के लिए पाँच 'शेल्टर होम' चलाते हैं।**

जिसके लिए उन्हें बिहार सरकार से एक करोड़ रुपए की अनुदान राशि मिलती है।

जिसमें से मुज़फ्फ़रपुर शॉर्ट स्टे होम के लिए उन्हें 40 लाख अलग से मिलता है।

इतना ही नहीं ठाकुर जी एक वृद्धाश्रम भी चलाते हैं जिसके लिए 15 लाख सरकार की तरफ़ से मिलता है। और 'सेल्फ़ हेल्प कम रहबिटेशन' के नाम पर 32 लाख ऊपर से और।

अब आप ख़ुद ही अंदाज़ा लगाइए कि ऐसे रसूखदार आदमी के सामने किसी की भी हिम्मत है कि वो एक शब्द भी बोल सके।

बालिका गृह के आस-पास रहने वाले लोग बोलते है कि उन्हें बालिका गृह के अंदर से चीख़ने-रोने की आवाज़ें आती थी। मगर ब्रजेश ठाकुर के रौब के आगे वो कुछ पूछने तक की हिमाक़त नहीं कर सकते थे।

ब्रजेश ठाकुर के पहुँच का अंदाज़ा इसी से लगा लीजिए कि अभी उसका ये बालिका गृह सील हुआ है और अभी ही 'भिखारियों के शेल्टर होम' के लिए सरकार की तरफ़ से उसे टेंडर मिला है।

जिसके तहत हर महीने उसे एक लाख रुपय मिलेंगे।

मेरे इस लेख लिखने का कोई फ़ायदा नहीं है। मैं जानती हूँ। क्यूँ?

क्यूँकि जिनको ब्रजेश ठाकुर जैसे दरिंदे के खिलाफ़ करवाई करनी चाहिए वो तो उसके गोद में जा बैठे हैं।

वैसे भी किसको पड़ी है उन अनाथ लड़कियों की। देश में हर दिन हज़ारों बलात्कार होते हैं। क्या हुआ जो 34 और लड़कियों का हो गया।

कम से कम वो ज़िंदा तो है। नहीं!

**इसके लिए ब्रजेश जी का सम्मान होना चाहिए। आख़िर वो चाहते तो जान से मार भी देते मगर उदारता देखिए नहीं न मारा।**

बस इसी आधार पर उन्हें और उनके साथ बाक़ी के नौ गुनहगार को भी बाइज़्ज़त बरी कर दिया जाएगा।

अपने देश का अंधा क़ानून है ही ऐसा।

अभी जब ये लिख रही हूँ तो टी.वी. पर ब्रेकिंग न्यूज़ में फ़्लैश हो रहा,

"राजस्थान में 7 साल की बच्ची का बलात्कार कर जान से मार डाला। बच्ची का शव घर से सात किलोमीटर की दूरी पर मिला।" दुनिया को ख़त्म हो जाना चाहिए बस अब तो!

**- साइबर नजर**

# हादसे के इंतजार में खड़ी बिल्डिंग

**म मो ( पलवल )- डी ए वी स्कूल पलवल की बिल्डिंग कभी भी गिर सकती है लेकिन स्कूल प्रशासन आँख बंद कर किसी हादसे का इंतजार कर रहा है। डी ए वी स्कूल की ये बिल्डिंग वो है जो इन्होने स्कूल की मान्यता प्राप्त करने हेतु गाडर पत्थर से जल्दबाजी में बनाई थी। अब ये बिल्डिंग बिलकुल जर्जर हो चुकी है लेकिन स्कूल प्रशासन अभी भी इसमें बच्चों की क्लास लगा रहा है। इतना तो तब है जब डी ए वी स्कूल व संस्थानों को चलाने वाली डीएवी प्रबंधक कमेटी संसार में सबसे बड़ी शिक्षा संस्थान संचालन करने वाली संस्था है और इसका अरबों रुपये का कारोबार है। जिला प्रशासन भी आंख बंद करके बैठा है।**